Sample Question Paper
Psychology (592)
Class 11th
Marking scheme

Q. No.		Distribution of Marks
1	ग्रीक Greek	1
2	मूर्त संक्रियात्मक अवस्था Concrete operational stage	1
3	मूलर-लायर भ्रम Muller-Lyer illusion	1
4	अनुबंधन Conditioning	1
5	एटकिंसन तथा शिफ्रिन Atkinson and Shiffrin	1
6	निगमनात्मक तर्कना Deductive Reasoning	1
7	आश्रित परिवर्त्य Dependent Variable	1
8	प्रसवपूर्व Prenatal	1
9	एकनेत्री Monocular	1
10	1879 1879	1
11	एबिंगहास Ebbinghhaus	1
12	जे पी गिलफर्ड J.P.Guilford	1
13	a	1
14	b	1
15	d	1
	PART - B	
16	व्यवहार वे प्रतिक्रियाएँ हैं जो हम करते हैं या गतिविधियाँ जिनमें हम संलग्न होते हैं। व्यवहार सरल या जटिल, लघु या स्थायी हो सकते हैं। (1 अंक) प्रकट व्यवहार का उदाहरण	2

Download from www.MsEducationTv.com

	एक बाघ को देखते हैं और दौड़ते हैं। अप्रकट व्यवहार का उदाहरण जब हम सोचते हैं कि बाघ है और भाग जाना चाहिए। (1 अंक) Behaviour is a response or a reaction of an individual or an activity in which the individual is engaged in. It is the result of a stimulus in the environment or an internal change. Behaviours may be simple or complex and overt or covert. (1 Mark) Example of overt behaviour When a person runs away after seeing a tiger. Example of covert behavior When a person sees a tiger and decides to flee.(1 Mark)	2
17	जब प्रेक्षण प्राकृतिक अथवा वास्तविक जगत की स्थिति में किया जाता है तो उसे प्रकृतिवादी प्रेक्षण कहा जाता है।(1अंक) इस प्रेक्षण में प्रेक्षणकर्ता परिस्थिति का न तो प्रहस्तन करता है और ना ही उस को नियंत्रित करने का प्रयास करता है। (1अंक) अथवा साक्षात्कार एक उद्देश्य पूर्ण क्रियाकलाप है जिसमें तथ्यपरक सूचनाएं, अभिमत तथा अभिवृति एवं व्यवहार विशेष के कारण आदि प्रतिक्रियादाताओं से प्राप्त किए जाते हैं। यह आमने-सामने किया जाता है किंतु कभी-कभी यह दूरभाष पर भी संपन्न होता है। (2अंक) When observations are done in a natural or real life setting, it is called naturalistic observation.(1 Mark) In this observation the observer makes no effort to control or manipulate the situation for making an observation. (1 Mark) OR An interview is a purposeful activity conducted to derive factual information, opinions , attitude and reasons for particular behaviour of etc. from the respondents. It is generally conducted face to face but	2 2

Download from www.MsEducationTv.com

	sometimes it can also take place over the phone. (2 Mark)	
18	जिन वस्तुओं में समानता होती है तथा विशेषताओं में भी एक दूसरे के समान होते हैं वह एक समूह के रूप में प्रत्यक्षित होती हैं, इसे समानता के सिद्धांत के नाम से जाना जाता है।(2अंक) Objects that are similar to one another and have similar characteristics are perceived as a group, it is known as principle of similarity. (2 Mark)	2 2
19	प्रबलन अनुसूची के दो प्रकार 1. सतत प्रबलन (1अंक) 2. आंशिक प्रबलन (1अंक) Two schedule of reinforcement 1. Continuous reinforcement (1 Mark) 2. Partial reinforcement (1 Mark)	2 2
20	कोई भी नई सूचना पहले संवेदी स्मृति में आती है।समस्त संवेदनाएं यंहा उद्दीपक की प्रतिकृति के रूप में संग्रहित की जाती हैं। (1अंक) संवेदी स्मृति की संचयी क्षमता तो बहुत होती है किंतु इसकी अवधि बहुत कम होती है एक सेकंड से भी कम।(1अंक) अथवा प्रक्रियामूलक स्मृति उन स्मृतियों से संबंधित है जिनमें किसी कार्य को पूरा करने के लिए कुछ कौशल की आवश्यकता होती है। (1अंक) जैसे साइकिल चलाना, चाय बनाना, बास्केटबॉल खेलना आदि। प्रक्रियामूलक स्मृति को सहजता से वर्णित नहीं किया जा सकता। (1अंक) The sensory memory—contains a fleeting impression of a sensory stimulus (a sight or a sound). It is initial process that preserve brief impression of stimuli. (1 Mark) It has a large capacity. It is of very short duration that is less than a second. (1 Mark) OR Procedural Memory refers to memories relating to	2 2

Download from www.MsEducationTv.com

	procedures of accomplishing various tasks.(1 Mark) For example how to make tea, play basketball or drive a car. . Contents of this memory cannot be described easily. (1 Mark)	
21	मैस्लो ने मानव व्यवहार को चित्रित करने के लिए आवश्यकताओं को एक पदानुक्रम में व्यवस्थित किया है। उनके सिद्धांत को आत्मसिद्धि का सिद्धांत कहते हैं। पदानुक्रम की आवश्यकताएं इस प्रकार हैं 1. शरीर क्रियात्मक आवश्यकता 2. सुरक्षा की आवश्यकता 3. आत्मीयता की आवश्यकता 4. सम्मान की आवश्यकता 5. आत्मसिद्धि की आवश्यकता (2अंक) The basic idea behind Maslow's hierarchy of needs is the portrayal of human behaviour by arranging the various needs in a hierarchy in terms of their importance for the sustenance of an individual. They are arranged in an ascending order with the fundamental needs at the base and self-actualisation at the top. The hierarchy of needs are as follows: 1. Physiological needs 2. Safety needs 3. Belongingness needs 4. Esteem needs 5. Self-actualisation needs (2 Marks)	2 2
22	विकासात्मक मनोविज्ञान शारीरिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक परिवर्तनों का अध्ययन करता है जो गर्भाधान से लेकर वृद्धावस्था तक जीवन-काल के विभिन्न चरणों और उम्र में होते हैं। (3 अंक) Developmental psychology studies the physical, social and psychological effects of changes that occur at different stages and ages of the life span from conception to old age. (3 Marks)	3 3
23	विकास गतिशील क्रमबद्ध एवं पूर्वकथनीय परिवर्तनों का प्रारूप है जो गर्भाधान से प्रारंभ होता है और जीवन पर्यंत चलता रहता	3

Download from www.MsEducationTv.com

	है। विकास में संवृद्धि और हास जो वृद्धावस्था में देखा जाता है दोनों ही तरह के परिवर्तन होते हैं। (1अंक) संवृद्धि शारीरिक अंगों एवं संपूर्ण जीव की बढ़ोतरी को कहते हैं। इसका मापन किया जा सकता है, उदाहरण के लिए, ऊंचाई, वजन आदि में वृद्धि। (1अंक) परिपक्वता उन परिवर्तन की ओर इंगित करता है जो एक निर्धारित क्रम में अनुसरण करते हैं तथा उस आनुवांशिक रूपरेखा से सुनिश्चित होते हैं जो हमारे संवृद्धि और विकास में समानता उत्पन्न करते हैं। (1अंक) The term Development refers to the changes that have a direction and hold definite relationship with what precedes it.It includes changes in size, changes in proportion, changes in features and acquiring new features. Development includes growth as one of its aspects. (1 Mark) Growth:Growth refers to an increase in the size of body parts or of the organism as a whole. It can be measured or quantified, e.g. growth in height and weight. (1 Mark) Maturation: It refers to the changes that follow an orderly sequence and are largely dictated by the genetic blueprint which produces commonalities in our growth and development. (1 Mark)	3
24	कभी-कभी हम संवेदी सूचनाओं की सही व्याख्या नहीं कर पाते हैं। इसके परिणाम स्वरूप भौतिक उद्दीपक और उसके प्रत्यक्षण में सुमेल नहीं हो पाता। हमारे ज्ञानेंद्रियों से प्राप्त सूचनाओं की गलत व्याख्या से उत्पन्न गलत प्रत्यक्षण को भ्रम कहते हैं। (1.5अंक) कुछ भ्रम सार्वभौम होते हैं और सभी लोगों में पाए जाते हैं, ऐसे भ्रमो को सार्वभौमिक भ्रम कहते हैं क्योंकि यह अनुभव और अभ्यास से परिवर्तित नहीं होते। कुछ अन्य भ्रम एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में परिवर्तित होते रहते हैं इन्हें व्यक्तिक भ्रम कहते हैं। (1.5अंक) अथवा हमारी ज्ञानेंद्रियां कुछ सीमाओं में काम करती हैं। उदाहरण के	3

Download from www.MsEducationTv.com

	लिए हमारी आंखें ऐसी चीज़ नहीं देख सकते जो बहुत धुंधली या चमकदार होती हैं। इसी प्रकार हमारे कान बहुत ही कम या बहुत तीव्र ध्वनि नहीं सुन सकते हैं। हमारे संवेदन ग्राही के ध्यान में आने के लिए उद्दीपक में इष्टतम तीव्रता अथवा परिमाण होना चाहिए। (3 अंक) Illusions occur because of a result of a mismatch between the physical stimuli and its perception by the individual. The mismatch is caused by incorrect interpretation of information received by sensory organs. Illusions are called primitive organisations as they are generated by an external stimulus situation that generates the same kind of experience in all the individuals. (1.5 Marks) Some illusions are universal in nature as they are found in all individuals. They are also known as universal illusions or permanent illusions because they do not change with experience and practice. Contrary to this, illusions that vary in different individuals are known as personal illusions. (1.5 Marks) OR Sense organs function with certain limitations. For example our eyes cannot see things which are very dim or very bright. Similarly our ears cannot hear very faint or very loud sounds. The same is true for other organs also. As human beings, we function within a limited range of stimulation. For being noticed by a sensory receptor a stimulus has to be of an optimal intensity or magnitude. (3 Marks)	3
25	स्मृति एक प्रक्रिया है जिसमें तीन स्वतंत्र किंतु अंतः संबंधित अवस्थाएं होती हैं: कूट संकेतन पहली अवस्था है जिसका तात्पर्य है उस प्रक्रिया से है जिसके द्वारा सूचना स्मृति तंत्र में पहली बार पंजीकृत की जाती है ताकि इसका पुनः उपयोग किया जा सके। (1अंक) भंडारण स्मृति की दूसरी अवस्था है जिस सूचना का कूट संकेतन किया गया, उसका भंडारण भी आवश्यक है ताकि सूचना का बाद में उपयोग किया जा सके। (1अंक) पुनरुद्धार स्मृति की तीसरी अवस्था है। सूचना का उपयोग तभी	3

Download from www.MsEducationTv.com

	किया जा सकता है जब कोई व्यक्ति अपने स्मृति से उसे वापस प्राप्त करने में समर्थ हो। (1अंक) OR विस्मरण की व्याख्या के लिए प्रतिपादित मुख्य सिद्धांत निम्न है •चिन्ह हास के कारण विस्मरण •अवरोध के कारण विस्मरण •पुनरुद्धार असफलता के कारण विस्मरण (प्रत्येक का 1अंक) Memory is conceptualized as a process consisting of three independent, though interrelated stages. These are: Encoding: It is the first stage which refers to a process by which information is recorded and registered for the first time so that it becomes usable by our memory system. (1 Mark) Storage: It is the second stage of memory: Information which was encoded must also be stored so that it can be put to use later. Storage refers to the process through which information is retained and held over a period of time. (1 Mark) Retrieval: It is the third stage of memory. Information can be used only when one is able to recover it from his/her memory. (1 Mark) OR Forgetting takes place because of a sharp drop in memory. The following are the different theories that have been put forward to explain the causes of forgetting: • Forgetting due to decay • Forgetting due to interference • Forgetting due toretrieval (1 Mark for each theory)	3
26	सृजनात्मक चिंतन को बढ़ाने के कुछ उपाय निम्नलिखित हैं • मौलिकता • कल्पनाशीलता का उपयोग • प्रथम विचार को स्वीकार न करना	3

Download from www.MsEducationTv.com

	• प्रतिपुष्टि प्राप्त करना • स्वतंत्र चिंतन का विकास करना • आत्मविश्वास (कोई तीन, प्रत्येक का 1अंक) Strategies to enhance creative thinking • Originality • Use of Imagination • Not to accept initial ideas • Getting feedback • Developing independent thinking • Self-confident (any three, 1 Mark for each)	3
27	अभिप्रेरणा शब्द लैटिन शब्द 'movere' से लिया गया है, जिसका अर्थ क्रिया कलाप की गति से है। दैनिक व्यवहार की व्याख्या अभिप्रेरणा के रूप में की जाती है।सके। अभिप्रेरणा व्यवहार के बारे में भविष्यवाणी भी करती है, और इस प्रकार यह व्यवहार के निर्धारकों में से एक है। (1.5अंक) उदाहरण के लिए, काम पर जाने के पीछे पैसा कमाना ही कारण है। हालांकि इसके और भी कारण हो सकते हैं। इसी तरह, स्कूल/कॉलेज में जाने के पीछे का कारण अच्छी शिक्षा प्राप्त करना या डिग्री प्राप्त करना है ताकि एक अच्छी नौकरी मिल सके (1.5अंक) The term motivation has been derived from the Latin word ‘movere’, which refers to the movement of activity. The everyday behaviour is explained in terms of motives.Motivation also makes prediction about behaviour, and thus it is one of the determinants of behaviour. (1.5 Marks) For instance, earning money is the motive behind going to work. Though there can be other reasons too. Similarly, the motive behind attending school/college is getting good education or acquiring a degree so that one can get a good job. (1.5 Marks)	3 3
28	किसी वैज्ञानिक अनुसंधान की तरह मनोवैज्ञानिक जांच के लक्ष्य इस प्रकार हैं; वर्णन, पूर्वकथन, व्याख्या, व्यवहार का नियंत्रण औरइस प्रकार अर्जित ज्ञान का वस्तुनिष्ठ तरीकों से अनुप्रयोग करना। वर्णन: मनोवैज्ञानिक अध्ययन में हम व्यवहार अथवा किसी	5

Download from www.MsEducationTv.com

	घटना का यथा संभव सही -सही वर्णन करते हैं। इससे किसी व्यवहार विशेष को अन्य व्यवहारों से अलग करने में सहायता मिलती है. उदाहरण के लिए, शोधकर्ता विद्यार्थियों की अध्ययन की आदतों का प्रेक्षण करना चाहता है अध्ययन की आदतों में विविध प्रकार के व्यवहार आ सकते हैं; जैसे-सभी कक्षाओं में नियमित रूप से उपस्थित रहना, नियत कार्य समय पर करना, अध्ययन अनुसूची की योजना बनाना, नियत कार्यक्रम के अनुसार अध्ययन करना। शोधकर्ता अध्ययन की आदत का जो अर्थ समझता है, उसे उसका वर्णन करना चाहिए। पूर्वकथन : वैज्ञानिक जांच का दूसरा लक्ष्य व्यवहार का पर्वकथन करना है। यदि आप व्यवहार को सही सही समझने तथा उसका वर्णन करने में सक्षम हैं तो आप एक व्यवहार विशेष के अन्य व्यवहारों, घटनाओं अथवा गोचरों से संबंधों को सरलतापूर्वक जान सकते हैं। उदाहरण के लिए, अध्ययन के आधार पर, एक अनुसंधानकर्ता विभिन्न विषयों के अध्ययन समय की मात्रा एवं उपलब्धियों के बीच धनात्मक संबंध की स्थापना कर सकता है। बाद में यदि वह बालक विशेष अध्ययन के लिए पर्याप्त समय देता है तो आप इस बात का पूर्व कथन कर सकते हैं कि वह बालक परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करेगा। व्याख्या : मनोवैज्ञानिक जांच का तीसरा लक्ष्य व्यवहार के कारणों की अथवा उसके निर्धारकों की जानकारी प्राप्त करना है। मनोवैज्ञानिक मूलतः जानना चाहते हैं कि व्यवहार किन कारणों से घटित होता है और वे कौन सी दशाएं हैं जिनमें व्यवहार घटित नहीं होता है। उदाहरण के लिए किन कारणों से कुछ बच्चे अपनी कक्षा में अधिक ध्यान देते हैं? अन्य बच्चों की तुलना में कुछ बच्चे अध्ययन हेतु अधिक समय क्यों नहीं देते? अतः यह उद्देश्य अध्ययन किए जाने वाले व्यवहार के निर्धारकों से संबंधित होता है जिससे दो घटनाओ के बीच कार्य-कारण संबंध स्थापित किया जा सके। नियंत्रण : यदि आप व्यवहार विशेष के घटित होने की व्याख्या कर लेते हैं तो आप उक्त व्यवहार की पूर्ववर्ती दशाओं मे परिवर्तन करके उसको नियंत्रित कर सकते हैं। नियंत्रण तीन बातों से संबंधित होता है :किसी व्यवहार को घटित कराना, उसे	

Download from www.MsEducationTv.com

	कम करना अथवा बढ़ाना। उदाहरण के लिए आप चाहे तो अध्ययन के घंटों को उतना ही रहने दें अथवा आप उन्हे कम कर सकते हैं या बढ़ा सकते हैं। मनोवैज्ञानिक उपचारों द्वारा चिकित्सा के रूप में व्यक्तियों के व्यवहार में जो परिवर्तन होता है वह नियंत्रण का एक अच्छा उदाहरण है। अनुप्रयोग : मनोवैज्ञानिक जांच का अंतिम लक्ष्य लोगों के जीवन मे सकारात्मक परिवर्तन लाना है। विभिन्न दशाओं में समस्याओं का समाधान करने के लिए ही मनोवैज्ञानिक अनुसंधान किए जाते हैं। इन प्रयासों के कारण लोगों के जीवन की गुणवत्ता ही मनोवैज्ञानिक के मूल लगाव का विषय होती है। उदाहरण के लिए योग एवं ध्यान के प्रयोग से दबाव की मात्रा कम करके दक्षता बढाई जाती है (प्रत्येक लक्ष्य की व्याख्या का 1 अंक) अथवा प्रायोगिक विधि : प्रयोग प्रायः एक नियंत्रित दशा में दो घटनाओं या परिवर्त्यों के मध्य कार्य कारण संबंध स्थापित करने के लिए किया जाता है। यह सतर्कता पूर्वक संचालित प्रक्रिया है जिसमे एक कारक में कुछ परिवर्तन किए जाते हैं और किसी दूसरे कारक पर उनके प्रभाव का अध्ययन किया जाता है, जबकि अन्य संबधित कारक स्थिर रखे जाते हैं। प्रयोग मे कारण वह घटना है जिसे परिवर्तित किया जाता है। प्रभाव वह व्यवहार होता है जो प्रहस्तन के कारण परिवर्तित होता है। (2अंक) परिवर्त्य का संप्रत्यय: प्रायोगिक विधि में अनुसंधानकर्ता दो परिवर्त्यों के मध्य संबध स्थापित करने का प्रयास करता है। परिवर्त्य कोई घटना या उद्दीपक या घटना जो बदलती रहती है अर्थात इसके भिन्न भिन्न मान होते हैं और इसके लिए इसका मापन किया जा सकता है। उदाहरण के लिए लिखने के लिए आप जिस कलम का उपयोग करते हैं वह एक परिवर्त्य नहीं है। लेकिन कलमें विभिन्न आकारों, प्रकारों एवं रंगों की होती है। ये सभी परिवर्त्य हैं (1अंक) अनाश्रित परिवर्त्य वह परिवर्त्य होता है जिसका प्रहस्तन किया	

Download from www.MsEducationTv.com

	जाता है अथवा जिसे प्रयोग में अनुसंधानकर्ता द्वारा परिवर्तित किया जाता है। (1अंक) आश्रित परिवर्त्य वह होता है जिस पर अनाश्रित परिवर्त्य के प्रभाव का प्रेक्षण किया जाता है। आश्रित परिवर्त्य उस गोचर को बताता है जिसकी अनुसंधानकर्ता व्याख्या करना चाहता है। वह मात्र अनाश्रित परिवर्त्य में परिवर्तन के परिणामस्वरूप व्यवहार में परिवर्तन है और कुछ नहीं। आश्रित एवं अनाश्रित परिवर्त्य एक दूसरे पर आश्रित होते हैं किसी कीपरिभाषा एक दूसरे के बिना संभव नहीं हैं। प्रायोगिक दशा में अनाश्रित परिवर्त्य कारण है तथा आश्रित परिवर्त्य प्रभाव । (1अंक) Like any scientific research, psychological enquiry has the following goals; description, prediction, explanation, control of behaviour and application Description: In a psychological study, we attempt to describe a behavior or a phenomenon as accurately as possible. This helps in distinguishing a particular behavior from other behaviors. For example, the researcher may be interested in observing study habits among students. Study habits may consist of diverse range of behavior, such as attending all classes regularly, submitting assignments on time, planning your study schedule, studying according to the set schedule, revising your work on a daily basis etc. Within a particular category there may be minute descriptions. The researcher needs to describe his/her meaning of study habits. The description requires recording of a particular behavior which helps in its proper understand. Prediction: The second goal of scientific enquiry is prediction of behavior. If you are able to understand and describe the behavior accurately, you come to know the relationship of a particular behavior may occur within a certain margin of error. For example, on the basis of study, a researcher is able to establish a positive relationship between the amount of study time and achievement in different subjects. Later, if you come to know that a particular child devotes more time for	5

Download from www.MsEducationTv.com

	study, you can predict that the child is likely to get good marks in the examination. Prediction becomes more accurate with the increase in the number of persons observed. Explanation: The third goal of psychological enquiry is to know the casual factors of behavior. Psychologists are interested in knowing the factors that make behavior occur. For example, what makes some children more attentive in the class while some children devote less time for study as compare to others ?Thus, this goal is concerned with identifying the determinants conditions of the behavior being studied so that cause - effect relationship between two variables or events could be established. Control: If you are able to explain why a particular behavior occurs, you can control that behavior by making changes in its antecedent conditions. Control refers to three things: making a particular behavior happen, reducing it or enhancing it. For example, you can allow the number of hours devoted to study to be the same or you can reduce them or there may be an increase in the study hours. The change brought about in behavior by psychological treatment in terms of therapy in persons, is a good example of control. Application: The final goal of the scientific enquiry is to bring out positive changes in the lives of people. Psychological research is conducted to solve problems in various settings. Because of these efforts the quality of life of people is a major concern of psychologists. For example, applications of yoga and meditation help to reduce stress and increase efficiency. (1Mark for each goal) OR Experimental method Experiments are generally conducted to establish cause- effect relationship between two sets of events or variables in a controlled setting. It is a carefully regulated procedure in which changes are made in one factor and its effect is studied on another factor, while keeping other related factors constant. In the	

Download from www.MsEducationTv.com

	experiment, cause is the event being changed or manipulated. Effect is the behavior that changes because of the manipulation. (2 Marks) Variable: any stimulus or event which varies, that is. It takes on different values and can be measured is a variable. An object by itself is not a variable. But its attributes are. For example, the pen that you use for writing is not a variable. But there are varieties of pens available in different shapes, sizes and color. All of these are variables. (1 Mark) Independent variable: thevariable which is manipulated or altered or its strength varied by the researcher in the experiment. It is the effect of this change in the variable which the researcher wants to observe. (1 Mark) Dependent variable:the variables on which the effect of independent variable is observed is called dependent variable. Dependent variable represents the phenomenon the researcher desires to explain. It is expected that change in the dependent variable will ensue from changes in the independent variable. Thus, the independent variable is the cause and dependent variable the effect in any experimental situation. (1 Mark)	
29	पियाजे द्वारा प्रतिपादित संज्ञानात्मक विकास की अवस्थाएं संवेदी प्रेरक (0-2 वर्ष) : शिशु संवेदी अनुभवों का शारीरिक क्रियाओं के साथ समन्वय करते हुए संसार का अन्वेषण करता है। पूर्व संक्रियात्मक (2-7 वर्ष) : प्रतीकात्मक विचार विकसित होते हैं;वस्तु स्थायित्व उत्पन्न होता है;बच्चा वस्तु के विभिन्न भौतिक गुणों को समन्वित नहीं कर पाता। मूर्त संक्रियात्मक (7-11 वर्ष) :बच्चा मूर्त घटनाओं के संबंध में युक्तिसंगत तर्कना कर सकता है और वस्तुओं को विभिन्न समूहों में वर्गीकृत कर सकता है। वस्तुओं की मानस प्रतिमाओं पर प्रतिवर्तनीय मानसिक संक्रियाएँ करने में सक्षम होता है। औपचारिक संक्रियात्मक (11-15 वर्ष) :किशोर तर्क का अनुप्रयोग अधिक अमूर्त रूप से कर सकते हैं; परिकल्पनात्मक चिंतन	5

Download from www.MsEducationTv.com

	विकसित होते हैं। अथवा किशोरावस्था : अंग्रेजी का शब्द एडोलसेंस लैटिन भाषा के शब्द एडोलसीयर से व्युत्पन्न है जिसका अर्थ है 'परिपक्व रूप में विकसित होना' । किशोरावस्था को सामान्यतया जीवन की उस अवस्था के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसका प्रारंभ यौवनारम्भ से होता है, जब यौवन परिपक्वता या प्रजनन करने की योग्यता प्राप्त कर ली जाती है। (2अंक) किशोरों में एक अहमकेंद्रवाद होता है। डेविड एलकइंड के अनुसार काल्पनिक श्रोता एवं व्यक्तिगत दंतकथा किशोरों के अहमकेंद्रवाद के दो घटक हैं। (1अंक) काल्पनिक श्रोता: किशोरों का एक विश्वास है की दूसरे लोग उन्हीं पर ध्यान दे रहें हैं एवं उनके प्रत्येक व्यवहार का प्रेक्षण कर रहें हैं। एक लड़के की कल्पना कीजिए जो सोचता है कि उसकी शर्ट पर लगे स्याही के धब्बे पर लोग ध्यान देंगे, अथवा एक लड़की जिसके गालों पर फुंसियाँ हैं, सोचती है कि लोग सोचेंगे कि त्वचा कितनी खराब है। (1अंक) व्यक्तिगत दंतकथा: इसमें किशोरों में अद्‌वितीय होने का भाव होता है। किशोरों में अद्‌वितीयता का बोध उन्हें यह सोचने के लिए प्रेरित करता है कि कोई भी व्यक्ति उसकी अनुभूतियों को नहीं समझता है। (1अंक) Piaget's stages of cognitive development 1.Sensory motor(0-2 years) : Infant explores the world by coordinating sensory experiences with physical actions. 2.Preoperational(2-7 years) :Symbolic thought; object permanence is established; the child cannot coordinate different physical attributes of an object. 3.Concrete operational(7-11 years) :The child can reason logically about concrete events and classify objects into different sets. Is able to perform reversible mental operations on representation of objects. 4.Formal operational (11-15 years) : The adolescent can apply logic more abstractly; hypothetical thinking develops.	5

Download from www.MsEducationTv.com

	OR Adolescence: adolescence is commonly defined as the stage of life that begins at the onset of puberty, when sexual maturity or the ability to reproduce is Attained . (2 Marks) Egocentrism: adolescents also develop a special kind of egocentrism.According to David Elkind imaginary audience and personal fable are two components of adolescents' egocentrism. (1 Mark) Imaginary Audience: It is adolescent's belief at others are as preoccupied with then as they are about themselves. They imagine that people are always noticing them and are observing each and every behaviour of theirs. Imagine a boy who thinks that all notice the ink spot on his shirt, or a girl with a pimple feels, all people would think how bad her skin is.it is the imaginary audience which makes them extremely self-conscious. (1 Mark) Personal fable: The personal fable is the part of the adolescents' egocentrism that involves their sense of uniqueness. Adolescents' sense of uniqueness makes them think that no one understands them or their feelings. (1 Mark)	
30	अधिगम: मनुष्य के व्यवहारों मे अधिगम की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। अधिगम को हम अनुभवों के कारण व्यवहार में अथवा व्यवहार की क्षमता मे होने वाले अपेक्षाकृत स्थाई परिवर्तन के रूप में परिभाषित कर सकते हैं। (2अंक) अधिगम की विशेषताएं : 1.अधिगम की पहली विशेषता यह है कि अधिगम में सदैव किसी न किसी तरह का अनुभव सम्मिलित रहता है। हम एक घटना को बहुत बार एक निश्चित क्रम में घटित होते हुए अनुभव करते हैं। हम जान जाते हैं कि अमुक घटना के तुरंत बाद दूसरी घटनाएं होंगी। उदाहरणार्थ , छात्रावास मे सूर्यास्त के बाद घंटी बजने से छात्र समझ जाते हैं की अब भोजनालय में रात का खाना तैयार हो गया है। 2.अधिगम के कारण व्यवहार में होने वाले परिवर्तन अपेक्षाकृत स्थाई होते हैं। इनको व्यवहार में होने वाले उन परिवर्तनों से अलग पहचानना चाहिए जो न तो स्थाई होते है ओर न ही	5

Download from www.MsEducationTv.com

	सीखे गए होते हैं। उदाहरणार्थ थकान, औषधि, आदत आदि के कारण भी बहुधा व्यवहार में परिवर्तन होते हैं 3.अधिगम में मनोवैज्ञानिक घटनाओं का एक क्रम निहित होता है। इस प्रकार अधिगम एक अनुमानित प्रक्रिया है और निष्पादन से भिन्न है। निष्पादन व्यक्ति का प्रेक्षित व्यवहार या अनुक्रिया या क्रिया है। (प्रत्येक विशेषता का 1 अंक) अथवा अधिगम अशक्तता : यह एक सामान्य पद है इसका अर्थ विभिन्न प्रकार के उन विकारों के समूह से है, जिनके कारण किसी व्यक्ति में सीखने, पढ़ने,लिखने,बोलने,तर्क करने तथा गणित के प्रश्न हल करने आदि में कठिनाई होती है। इन विकारों के स्त्रोत बच्चे में जन्मजात रूप से अंतर्निहित होते हैं। ऐसा विश्वास किया जाता है कि केन्द्रीय तांत्रिक तंत्र की कार्यविधि में समस्याओं के कारण अधिगम अशक्तता पाई जाती है। अधिगम अशक्तता के साथ साथ किसी बच्चे में शारीरिक अक्षमता, संवेदी अक्षमता, बौद्धिक अशक्तता भी हो सकती है या अधिगम अशक्तता इनके बिना भी हो सकती है। (2अंक) अधिगम अशक्तता के लक्षण 1. अक्षरों, शब्दों तथा वाक्यांशों को लिखने में, लिखी हुई सामग्री को पढ़ने में तथा बोलने में बहुधा कठिनाई पाई जाती है। यद्यपि उनमें श्रवण दोष नहीं होता है तथापि उनमे सुनने की समस्याएं पाई जाती हैं। 2. अधिगम अशक्तता वाले बच्चों में अवधान से जुड़े विकार पाए जाते हैं। वे किसी एक विषय पर देर तक ध्यान केंद्रित नहीं कर पाते तथा उनका ध्यान शीघ्र ही टूट जाता है। 3. अधिगम अशक्तता वाले बच्चों में स्थान व समय की समझदारी की कमी आम लक्षण हैं। ये नई जगहों को आसानी से नहीं पहचान पाते और अक्सर खो जाते हैं। 4. अधिगम अशक्तता वाले बच्चों का पेशीय समन्वय तथा हस्त -निपुणता अपेक्षाकृत निम्नकोटि का होता है। 5. ये बच्चे काम करने के मौखिक अनुदेशों को समझने और अनुसरण करने में असफल होते हैं।	

Download from www.MsEducationTv.com

	6. सामाजिक संबंधों का मूल्यांकन भी ये ठीक से नहीं कर पाते। उदाहरण के लिए, ये नहीं जान पाते कि कौनसा सहपाठी इनका अधिक मित्र है और तटस्थ कौन है। 7. अधिगम वाले बच्चों में आंमतौर से प्रात्यक्षिक विकार भी पाए जाते हैं। दृष्टि, श्रवण, स्पर्श तथा गति से जुड़े संकेतों का प्रत्यक्षण करने में इनसे अधिक त्रुटियाँ होती हैं। 8. अधिगम अशक्तता वाले अधिकांश बच्चों में पठनवैकल्यं के लक्षण पाए जाते हैं। ये बहुत बार अक्षर और शब्दों की नकल नहीं कर पाते हैं;जैसे -कमर तथा रकम में, सपूत और कपूत में, 'ट' तथा 'ठ' , 'प' तथा 'फ' में अंतर करना इनके लिए बहुत कठिन होता है। (कोई 6 लक्षणों के 3 अंक) Learning: learning is a key process inhuman behaviour. Learning may be defined as "any relatively permanent change in behaviour or behavioural potential produced by experience".(2 Marks) Features of learning: 1.The first feature is that learning always involves some kinds of experience. We experience an event occurring in a certain sequence on a number of occasions. If an event happens then it may be followed by certain other events. For example, one learns that if the bell rings in the hostel after sunset, then dinner is ready to be served. 2. Behavioural changes that occur due to learning are relatively permanent. They must be distinguished from the behavioural changes that are neither permanent nor learnt. For example, changes in behaviour often occur due to the effect of fatigue, habituation and drugs. 3. Learning involves a sequence of psychological events. Learning is an inferred process and is different from performance. Performance is a person's observed behaviour or response or action. (1 Mark for each characteristic) OR Learning disability: it is a general term. It refers to a heterogeneous group of disorders manifested in terms of difficulty in the acquisition of learning, reading, writing, speaking, reasoning and mathematical	

Download from www.MsEducationTv.com

	activities. The sources of such disorders are inherent in the child. It is presumed that these difficulties originate from problems with the functioning of the central nervous system it may occur in conjunction with physical handicaps, sensory impairment, intellectual disability or without them.(2 Marks) Symptoms of learning disability: 1. Difficulties in writing letter, words and phrases, reading out text and speaking appear quite frequently. Quite often they have listening problems, although they may not have auditory defects. 2. Learning disabled children have disorders of attention. They get easily distracted and cannot sustain attention on one point for long. 3. Poor space orientation and inadequate sense of time are common symptoms. Such children do not get easily oriented to new surroundings and get lost . 4. Learning -disabled children have poor motor coordination and poor manual dexterity. 5. These children fail to understand and follow oral directions for doing things. 6. They misjudge relationships as to which classmates are friendly and which ones are in different. 7. Learning-disabled children usually show perpetual disorders. They may include visual, auditory, tactual and kinaesthetic misperception. 8. Fairly large number of learning – disabled children have dyslexia. They quite often fail to copy letters and words; for example they fail to distinguish between b and d, p and q ,p and g, was and saw etc. (Three marks for any six symptoms)	

- यदि परीक्षार्थी ने अंक योजना से भिन्न, किंतु उपयुक्त उत्तर दिए हैं, तो उसे उपयुक्त अंक दिए जाएं।
- If an examinee writes an acceptable answer which is not given in the marking scheme he or she may be awarded marks.

Download from www.MsEducationTv.com